।। श्रीचित्रापुर मठ त्रिशती भजन।।

विद्या दे माँ बुद्धि दे माँ सदा सन्मति दे दे माँ ।
भक्ति दे माँ शक्ति दे माँ जीवनमुक्ति दे दे माँ ।। ध्रु ।।

हृदयकी वीणा बजाने वाली
आत्मका हंस सजानेवाली ।
दिव्य स्फुरण बन मनमें बहना
नित्य निरन्तर चित्त में रहना ।। १ ।।

वाणी तू ब्रह्माणी तू है
कला पूर्ण कल्याणी तू है ।
दिव्य स्फुरण बन मनमें बहना
नित्य निरन्तर चित्त में रहना ।। २ ।।

किस अन्याय से कुपित हुई थी
विवश हो इस विध लुप्त हुई थी ।
दिव्य स्फुरण बन मनमें बहना
नित्य निरन्तर चित्त में रहना ।। ३ ।।

स्वीकार करो माँ क्षमा याचना
उद्धार करो माँ यही प्रार्थना ।
दिव्य स्फुरण बन मनमें बहना
नित्य निरन्तर चित्त में रहना ।। ४ ।।

कुरुक्षेत्र हरस्तर का मिटाना
अन्तर बाह्य को शान्त बनाना ।
सरस्वती फिर दरशन देकर
सारस्वत को कृतार्थ करना
(अखिल जगत को कृतार्थ करना)
दिव्य स्फुरण बन मनमें बहना
नित्य निरन्तर चित्त में रहना ।। ५ ।।

Lyrics composed by Smt Shailaja Ganguly
Music composed by Smt Meera Balsaver
Music Arranging done by Shri Yeshwant Moolky